भारतीय योद्धा

योगदान, युद्धनीति एवं सामरिक विचार

संपादक

प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, सैनिक शास्त्र विभाग
श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी, महाराष्ट्र

देविदास विजय भोसले
सहायक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, रक्षा और सामरिक
अध्ययन विभाग तुलजाराम चतुरचंद कॉलेज,
बारामती, महाराष्ट्र

भारती पब्लिकेशंस
नई दिल्ली 110002

सवाधिकार सुरक्षित : प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे एवं देविदास विजय भोसले, 2021

शीर्षक: भारतीय योद्धाः योगदान, युद्धनीति एवं सामरिक विचार

संपादक: प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे एवं देविदास विजय भोसले

प्रथम संस्करण: 2021

ISBN : 978-93-90818-95-2

प्रकाशक:

भारती पब्लिकेशन्स

4819 / 24, तीसरी मंजिल, अंसारी रोड

फोन नं.: 011–23247537, 9899897381

ई–मेल: bhartipublications@gmail.com

Website : www.bhartipublications.com

मुद्रक : एस. पी. कौशिक एंटरप्राइजेज, दिल्ली

अस्वीकरण:
पुस्तक में दी गई विषय वस्तु पूर्ण रूप से लेखक के अपने विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक किसी भी विषय वस्तु के लिए जिम्मेदार नही हैं। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा किसी के द्वारा पुनरुत्पादित या प्रेषित बिना अनुमति के नहीं किया जा सकता है। इस प्रकाशन के संबंध में किसी भी व्यत्तिफ द्वारा अनधिकृत कार्य या नुकसान के लिए आपराधिक अभियोजन के लिए वह व्यत्तिफ उत्तरदायी होगा।

प्रस्तावना

हमें यह पुस्तक ''भारतीय योद्धाः योगदान, युद्धनीति एवं सामरिक विचार'' वाचकों को सौंपते हुए अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक का लक्ष्य भारतीय इतिहास के युद्धगाथाओं एवं उसमे भारतीय वीर योद्धा जिन्होंने अपने खून से यह विरता की गाथा लिखी है उनके बारे में लोगों को जानकारी देना है। भारतीय इतिहास के युद्धगाथाओं एवं उसमे भारतीय वीर योद्धा इनके संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने वाले छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी होगी। इस पुस्तक की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्रों में वर्तमान घटनाक्रमों और भारतीय इतिहास के युद्धगाथाओं एवं उसमे भारतीय वीर योद्धा इनके संबंधित ऐतिहासिक विचारों के बारे में विस्तृत लेखन किया हैद्य

भारतीय भूमी की एक प्राचीन सभ्यता है, जिसमें सद्भावना, प्रेम, अनुशासन, युद्धकला और योद्धाओ की ४००० वर्षो से अधिक पुराणी परंपरा है। भारत को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता एवं विरता का इतिहास है। हर देश में सेनानियों की अपनी उचित हिस्सेदारी होती है। लोग उन्हें देशभक्ति और अपने देश के लिए प्रेम के संदर्भ में देखते हैं। उन्हें लोगों की देशभक्ती का प्रतीक माना जाता है। दर्द, कठिनाई, और इसके विपरीत जो उन्होंने सहन किया है उसे शब्दों में ढाला नहीं जा सकता है। उनके बाद की पीढ़ियां हमेशा उनके निस्वार्थ बलिदान और कड़ी मेहनत के लिए उनकी ऋणी रहेंगी। इसके आलावा उनका युद्धकला, युद्धनिती और सामरिक विचारों में जो योगदान है वो नयी पीढ़ी के लिए मिसाल है। इस भारत के समृद्ध इतिहास का अभ्यास एवं संशोधन समय की आवश्यकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन्होंने कितनी छोटी

10	छत्रपती शिवाजी: युद्ध नीति एवं सैन्य व्यवस्थापन *प्रा. सोनवणे जी.एन.*	75-81
11	योद्धा छत्रपती शिवाजी महाराज *प्रा. डॉ. राहुल एम. भोरे*	82-88
12	छत्रपती शिवाजी महाराज और गोरिल्ला युद्ध तंत्र *प्रा. डॉ के. एम. नागरगोजे*	89-92
13	कान्होजी एक वीर योद्धा *श्री मंगेश भगवंतराव कुलकर्णी*	93-99
14	सेनापती संताजी घोरपडे और गुरिला युध्द *प्रा. कदम मोतीराम विठ्ठलराव*	100-106
15	रानी ताराबाई *डॉ. प्रज्ञा एस. जुनघरे*	107-110
16	राजर्षि शाहू महाराज – सामाजिक परिवर्तन मे योगदान *कल्पना एस गोडघाटे*	111-116
17	राजे मल्हारराव होलकर *प्रा. डॉ. हाके महाविर रामजी*	117-123
18	पेशवा बाजीराव: एक अपराजित योद्धा *रोहित पाटीदार और डॉ मनोज पाटीदार*	124-130
19	अहिल्यादेवी होलकर की जीवनी *डॉ. प्रणव महावीर हाके एवं* *प्रा. डॉ. हाके महावीर रामजी*	131-136
20	अहिल्याबाई होलकर का सामाजिक योगदान *प्रा. सौ. रश्मी रमेश देसाई*	137-143
21	सामाजिक क्रांति के प्रणेता संत सेवालाल महाराज *प्रो. (डॉ.) शेषराव लिंबाजी राठोड*	144-151
22	क्रांतिकारी संत सेवालाल महाराज के सामाजिक विचार एक दृष्टिक्षेप *डॉ. बि.एस. पवार*	152-158
23	महारानी लक्ष्मी बाई – सन 1857 के विद्रोह की प्रतीक (एक योद्धा) *डॉ. राजेश मौर्य एवं प्रो. जे. पी. मित्तल*	159-174
24	महारानी लक्ष्मीबाई *डॉ. अनीता चौधरी*	175-184
25	अपने युग का क्रांतिकारी जन नायक टंट्या भील *डॉ. कल्पना वैश्य*	185-189
26	महात्मा गांधी : अहिंसा और विश्वशांति *डॉ. रंजना अरविंद शृंगारपूरे*	190-196
27	गांधी के विचारों की प्रासंगिकता *कांता वर्मा*	197-202
28	गांधी जी क विचारों की इमारत स्वच्छ भारत *डॉ. ममता पांडेय*	203-208
29	महात्मा गांधी : सत्य अहिंसा सत्याग्रह *प्रा. डॉ. दत्ता उध्दव जाधव*	209-214
30	महामानव बिरसा मुंडा और उलगुलान आंदोलन *पी. जे. चौधरी*	215-224
31	'वीर योद्धा बिरसा मुंडा' *प्रा. डॉ. एस. आर. पाटील*	225-229

- जीवन के सभी क्षेत्रों के लड़कों और लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।
- 1919 में शाहू महाराज के काम के सम्मान में कानपुर में कुर्मी क्षत्रिय सभा ने उन्हें राजर्षि की उपाधि से सम्मानित किया।

आधुनिक महाराष्ट्र के निर्माण में राजर्षि शाहू महाराज का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। समाज के सभी वर्गों को शैक्षिक अवसर प्रदान किए बिना सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। भारत का संविधान नागरिकों के समग्र विकास के लिए किसी भी प्रकार के भेदभाव न किये नागरिकों के मौलिक अधिकारों का प्रावधान करता है। भारतीय समाज में समानता के सिद्धांत को स्थापित करने के लिए मौलिक अधिकार महत्वपूर्ण हैं। सभी हितधारकों को इसके बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है।

ग्रन्थसूची

1. के सागर, महाराष्ट्रातील समाजसुधारक के सागर प्रकाशन पुणे अठारहवें संस्करण 2007
2. रा तू भगत, राजर्षि शाहू छत्रपति, रिया प्रकाशन कोल्हापुर अगस्त 2016
3. बी एस वाघमारे मानव संसाधन विकास और मानवाधिकार च्‍त्व्छि दिल्ली
4. www-wikipedia rajrshi shahu maharaj
5. www-chatrapati
6. www-rajrshi shahu maharaj

17

राजे मल्हारराव होलकर

प्रा. डॉ. हाके महाविर रामजी
सहयोगी प्राध्यापक तथा शोधनिदेशक
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड
परभणी

महाराष्ट्र के होल गाँव के चौधरी खंडूजी होलकर की पत्नी जीवाईदेवी ने मल्हारराव को मार्च 1693 ई.में जन्म दिया । मल्हारराव के आयु के. तीसरे वर्ष पिता खंडूजी की मौत हो गई। माता बालक को लेकर अपने भाई भोजराज के पास खानदेश के 'तालोद' गाँव गई । मल्हार मामा की भेड बकरियाँ चराता था। 1701 ई. में गौतमाबाई के साथ उनका विवाह हुआ। मामा सामंत कदम बांडे के सरदार थे। 16 साल की उम्र में मल्हार मामा की सेना में शिलेदार बने। एक संघर्ष में मल्हार ने निजाम के सिपहसालार को मारा। सामंत कदम बांडे ने उन्हे अपना शिलेदार बनाया। बाद में मल्हार नर्मदा किनारे बालगढ (बडवानी) गए। वहाँ के राजा मोहन सिंह ने उन्हें 500 सैनिकों का प्रमुख बनया। दत्तवाड गाँव जागीर में उन्हे दिया । 1711 ई.में

मल्हारराव ने मालवा मुक्त किया। इस समय बाजीराव 11 साल के थे परंतु यह विजय उन्ही के नाम पर लिख जाती है।

मल्हारराव के आने के पूर्व निमाड–मालवा के उजडे गाँव धीरे–धीरे बस रहे थे। महाराष्ट्र, उडीसा, बिहार, बुंदेलखंड, गोंडवाना, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात के नागरिक यहाँ के उजडे गाँवो कें मकानो को मरम्मत कर बस रहे थें। सघन जंगलो के वृक्षों को जलाकर खेती करने लगे थे। गुजरात से पटिदार, आँजना, कलौना, खेतिहर समाज और नीमा, नागर, छीपा व्यापारी समुदाय गुजरात में हो रहे मुसलमानों के अत्याचारों से त्रस्त हो इन वीरान जंगलो में सुख शांति की खोज में चले आ रहे थे। राजस्थान से राजपूत, जैन, ब्राह्मण, चर्मकार, जार मीणे बस रह थे। उत्तर प्रदेश से कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कायस्थ, मुराई, राजपूत जातियाँ आ रही थी। मल्हारराव जब निमाड आये तब वहाँ पुनः बसाहत होने लगी थी। शरणार्थी हिन्दू नागरिकों से अत्याचारों के वर्णन सुन मल्हारराव के मन में इस्लाम और मुसलमानों के प्रति नफरत पनपने लगी थी। जिसका परिणाम मल्हारराव के निमाड–मालवा विजय में देखने को मिला।

मल्हारराव का उग्र रुप :–

एक दिन मल्हारराव के सैनिक अपने घोडों के लिए निकट के खेतों में से गेहूँ की फसल काटकर घोडो को डाल रहे थे। पेशवा बालाजी विश्वानाथ के पुत्र 19 वर्षीय बाजीराव को यह बात पता लगी और बाजीराव दौडता हुआ खेत पर पहुँचा और फसल काट रहे सैनिक को लाठी से बुरी तरह मारने लगा। यह बेरहमी देख एक दूसरा सैनिक दौडता हुआ मल्हारराव के शिबिर में पहूँचा "रावसाहेब दौडिये। पेशवा का बेटा बाजीराव हमारे सैनिक को बुरी तरह मार रहा है।"1

सुनते ही मल्हारराव घटना स्थल की ओर दौड पडे । मल्हारराव बडबडाते रहे और बाजीराव भुमी पर बैठा सुनता रहा। बाजीराव के अंगरक्षक भी मल्हारराव का रौद्र रुप देख सहमें खडे देखते रहे। सारे

लश्कर में यह बात फैल गई कि बडवानी के सेनापति मल्हारराव ने पेशवा पुत्र पर हाथ उठा दिया है। बाजीराव को उठाये अंगरक्षक पेशवा के शिबिर में आये।

मल्हारराव का विवाह :

दिसम्बर का महिना और तालाब का किनारा, फिर अमझेरा और राजपुरा गाँव कुछ ऊँचाई पर बसे थे। कडाके की ठंड पड रही थी, मल्हारराव को कुछ दिन आराम करने की सलाह वैद्य ने दी थी, इस कारण चिमनाजी अपनी सेना और ऊदाजी पवार को ले उज्जैन की ओर चल दिया। तिरला युध्द में मराठा सेनाओं के हाथ तोंपें, बंदूके, हाथी–घोडे, मुगलों के डेरे–तम्बू लगे। उन्हे लेकर चिमनाजी उज्जैन की ओर चल दिये । बाजीराव को बुरहानपुर में अमझेरा युध्द में विजय के समाचार मिले, उसने समस्त मराठा सरदारों को बधाई संदेश भेजा। युध्दस्थल से डेढ सौ. मिल दुर रहने पर भी अमझेरा विजय का सारा श्रेय बाजीराव को मिला। पालखेड युध्द में भी प्रत्यक्ष भाग लेते हुए विजय का सारा श्रेय बाजीराव को मिल चुका था। इन दोनों युध्द में विजय को साकार रुप देने वाले मल्हारराव को नकार दिया गया। मल्हारराव का महत्व तो उज्जैन में प्रगट हो गया जहाँ राजा गिरधर बहादुर का पुत्र भवानीराम मोर्चा बांधे बैठा था। चिमनाजी सिर पटककर रह गया, पर चालीस दिनके घेरेबंदी के बाद भी मराठा सेनाएँ उज्जैन के परकोटे में प्रवेश नहीं कर सकी ।

कुछ लोग पिछले बीस वर्षो से मालवा के हिंदुओं को मुसलमानों के अत्याचारों से मुक्तिदिलाने वाले मल्हारराव को निहार रहे थे। छत्तीस वर्षीय मल्हारराव चट्टान पर खडे हो हुजूम बनाकर धक्का–मुक्की कर रहे लडके–लडकियों को खाई में फिसलने से बचने के लिए बार बार चेतावनी दे रहे थे।

एकाएक मल्हारराव के निकट खडी लडकी को पीछे से धक्का लगा और वह उफनकर घाटी में गिरती मान नदी में जा गिरी।

मल्हारराव ने भी पास खडी लडकी को खाई में गिरते देखा। मल्हारराव ने और नीचे झुककर लडकी की कलाई पकड ली। एक हाथ से पास की चट्टान का कोना पकड दुसरे हाथ से जोर लगा लडकी को खींचने लगे। कुछ पानी की भारी मार मुँह पर पडने के कारण ऊपर आते ही लडकी अचेत हो गई। ग्रामवासी लडकी को बचाने में मल्हारराव के जान जोखिम में डालने की प्रशंसा कर रहे थे। ग्राम प्रधान भावुक होकर मल्हारराव से लिपट गया। "बहुत–बहुत आभारी हूँ राव सा, आपका, आपने मेरी इकलौती लडकी के प्राण बचा कर मुझ पर बडा उपकार किया है।" 2

"अरे, मैंने तो आपकी लडकी की सेवा का ऋण चुकाया है, आपने देख नही, पिछले दो दिनों से कैसे मेरी सेवा कर रही थी।" 3

मल्हारराव तो पहले ही लडकी पर अपना मन हार चुके थे, बस कहने में संकोच कर रहे थे। वही प्रस्ताव कन्या के पिता के मुख से सुन उन्होंने हामी भर दी और देव उठनी ग्यारस पर दोनों का विवाह हो गया।

चालीस दिन के घेरे के बाद भी उज्जैन विजय में असफल चिमनाजी को मल्हारराव की याद आई और उनका पत्र अमझेरा से मल्हारराव को मिला। "शीघ्र चले आओ। आपके बिना उज्जैन में विजय नही मिलेगी"4 और मल्हारराव कें हाथो में मेहन्दी लगी दुल्हन को छोड, उज्जैन के रण हेतु चल दिये। यह मल्हारराव का दूसरा विवाह था।

उज्जैन युध्द में मिसाइलों का प्रयोग :–

मल्हारराव ने सेना सहित उज्जैन रवाना होते ही चापडा में नंदलाल मंडलोई को पत्र लिखा कि, वह देपालपुर में अपने घुडसवारों सहित आकर शीघ्र मिलें। आते समय 80 छोटी मिसाइले, 11 मन बारुद, आधा मन सीसा तथा 50 उँट लेकर आने को लिखा।

अहिल्याबाई से भेंट :–

प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त हो मल्हारराव मंदिर परिसर में टहल रहे थे कि उन्होंने एक आठ वर्षीय बालिका को हाथ में जल से भरा लोटा और टोकरी में पुष्प लिए मंदिर की ओर आते देखा। बालिका बँधे अश्वों और सैनिकों के मध्य से होती हुई निर्विकार मंदिर में प्रवेश कर गई । हुनमान मूर्ति पर पुष्प चढा निकटस्थ शिव मंदिर में जल चढा लौट गई। पुनः दूसरे दिन जब बालिका पूजा कर लौटने लगी तो मल्हारराव ने पुकारा.

"मुली थाम, इकडे ये।" 5

बालिका आवाज सुन रुकी और मल्हारराव के निकट आ बोली–

"काय म्हणता राव साहेब ?"

"तुझे नाव काय ?"

"अहिल्या।"

"इथेच राहतेस का"?

"हो"

"कोणाची मुलगी आहेस?"

"गावाचे पाटिल, माणकोजी शिंदे ची आता जाऊ ?"

"हो, जा"

कन्या के निर्भीक वार्तालाप, सौम्य मुख मण्डल और लावण्य ने मल्हाराव को प्रभावित किया। उसी दिन जब भोजन का थाल से सेवकों के साथ मानकोजी मंदिर में आए, तो भोजन करने हुए मल्हारराव ने पूछा

"माणकोजी । क्या अहिल्या आपकी पुत्री है?"

"हाँ, क्या कुछ बेअदबी की है उसने?"

"नही पाटिल । मैं अपने पुत्र के लिए यदि आपसे माँगू तो इनकार तो नही करेंगे?"

"नही सुबेदारजी, इसे तो मैं अपना सौभाग्य मानूँगा"

उसी दिन अहिल्या और मल्हारराव के पुत्र खण्डेराव के विवाह की बात तय होय गई। पाटिल माणकोजी शिंदे, अपनी पत्नी सुशीलाबाई और दोनों पुत्र शाहजी और तुकाराम को लेकर पूना आए, यही विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह पश्चात मल्हारराव अपनी पुत्रवधू और अहिल्या के भाई तुकाराम को लेकर मालवा चले आए।

खंडेराव की मृत्यु :

27 दिसम्बर 1753 को खंडेराव दिल्ली से निकला । उसके साथ होलकरों का दीवान गंगाधर चन्द्रचूड और मुगल फौज के साथ अकीबत खाँ था। 15जनवरी 1754 को खंडेराव जात इलाके में युध्द कर रहे अपने पिता से जा मिला, अब मराठा शक्ति दो गुनी हो गई थी। तभी रघुनाथराव भी अपनी सेना लेकर मल्हारराव से मिल गया। 17 मार्च 1754 को खंडेराव भोजन के उपरांत एक पालकी में बैठ कुम्भेर के घेरे का बंदोबस्त देखने निकला । किले में बैठे सुरजमल ने पालकी में बैठे किसी मराठा सरदार को घेरे का निरीक्षण करते देख समझा की यह कोई साधारण व्यक्ति नही कोई बडा मराठा सरदार है। सुरजमल के इशारा करते ही सारी तोंपें एक साथ गरज उठी। जम्बुरके का एक गोला पालकी में बैठे खंडेराव को लगा और तत्काल खंडेराव के प्राण चले गए। खंडेराव की अर्थी सजाई गई, खंडेरव के साथ अहिल्याबाई को छोडकर उसकी अन्य 2 पत्नी, 2 पावासन और 7 दासियाँ सती हो गई। खंडेराव ने गुलबदन नाम की एक कुत्ती भी पाली थी, वह भी जलती चिता में छलाँग लगाकर अपने मालिक के साथ जल गयी। मल्हारराव ने प्राथना कर अहिल्याबाई को सती होने से रोका। खंडेराव 30 वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए।

मल्हारराव से बादशाह पराजितः

अपने पुत्र की मृत्यू और स्वयं की प्रतिज्ञा में बाधक बने मल्हारराव के तीन शत्रु थे। एक तो स्वयं बादशाह अहमदशाह, दूसरा जयप्पा, तीसरा रघुनाथराव । मल्हाररावने एक–एक से बदला लेने की योजना बनाई।

निधन :

20 मई 1766 को मंदिरो की बजती घंटियों से सबकी नींद टूट गई, सूर्य की एक किरण रोशनदान से छनती मल्हारराव के मुख पर पड रही थी। अहिल्या उठी "दादा साहेब ! दादासाहेब !" उसने पुकारा, मालेराव की माँ को पुकारने सुन उठ बैठा।

"आजोबा, आजोबा" किंतू कोई जबाब नही । दोनों पत्नियाँ द्वारकाबाई और बजाबाई व पासवान घबराकर निकट आई। मल्हारराव के सिर पर हाथ फेर पुकारा, शरीर को झकझोर कर पुकारा किंतु मल्हारराव थे कहाँ हंस तो उड चुका था। भीष्म की तरह उत्तरायण में शरीर छोड आवागमन से मुक्त हो अनंत की यात्रा पर जा चुके थे। मल्हारराव अपने छत्रपति शाहूजी महाराज के पास। छत्रपति संभाजी महाराज के पास, हिंदू पद पादशाही के संस्थापक शिव छत्रपति के पास।

कक्ष में बैठे एक पंडित महोपाध्याय के मुख से मृत्यूंजय के स्वर फूट रहे थे।

इस प्रकार राजे मल्हारराव होलकर का चरित्र बहुत ही अनुठा रहा है।

संदर्भ :–

1. होलकर राज्य संस्थापक सुभेदार मल्हारराव होलकर–रामसिंह शेखावत, पृष्ठ संख्या–44
2. वही पृष्ठ संख्या–97
3. वही पृष्ठ संख्या–97
4. वही पृष्ठ संख्या–98
5. वही पृष्ठ संख्या–109

विश्व भर में कितनी ही संस्कृतियां शासक महाराजा हुए पर आज उनका अस्तित्व दिखाई नहीं देता पर भारतीय संस्कृति और भारतीय समाज पुरुष आज भी जीवंत है। यही है इतिहास जो कभी सभ्यताओं का उत्कर्ष देखता है तो कभी उनका पतन भी संजोता है। पर हर उत्कर्ष और पतन के बीच ऐसे अद्भुत चरित्रो का बलिदान होता है जो अपने रक्त से इन सभ्यताओं का सिंचन करते है। भारत भूमि के ऐश्वर्य और सुजलाम सुफलाम सम्पदा ने कई विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इनमे से कुछ इस सम्पदा को लूटने, यहाँ सत्ता चलाने या इसे बर्बाद करने भी आये। इन आक्रांताओ से टकराने के लिए इस भूमि ने कई वीरो को जन्म दिया उनमे से एक है महान प्रतापी अपराजित पेशवा बाजीराव। उनके उद्दात चरित्र को शब्दों ने बांधना शक्य नहीं है। बाजीराव ही १८ वीं शताब्दी में भारत भूमि के भाग्य विधाता बने और उनके जीवन काल में पेशवा साम्राज्य भारत के अधिकांश भाग यहाँ तक कि अटक से कटक और कन्याकुमारी से सागरमाथा तक फैल चूका था। युद्धों के अलावा उन्होंने अपने जीवन काल में कई तरफ के सांस्कृतिक कार्य जैसे धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार, कर का जनता के हितकार्यो में ही उपयोग करना आदि भी किये।

सन्दर्भ सूची:

1. ब्रिटिश आर्मी ऑफिसर बर्नार्ड मोंटोगेमेरी के विचार।
2. सेंट्रल प्रॉविन्सेस गजेटियर, अक्टूबर, २८, १६२६।
3. मेजर जनरल डी के पलित लिखित मुसिंग्स एंड मेमोरीज वॉल्यूम–२।
4. फील्ड मार्शल मांटगुमरी लिखित ए कन्साइस हिस्ट्री ऑफ वारफेयर।
5. जमनेशकुमार ओझा लिखित मेवाड़ का इतिहास।
6. पेशवा दफ्तर जिल्द ३० पत्र संख्या ३२१।

19

अहिल्यादेवी होलकर की जीवनी

डॉ. प्रणव महावीर हाके[1] एवं
प्रा. डॉ. हाके महावीर रामजी[2]

[1]एम.बी.बी.एस., ए.सी.पी. एम. मेडीकल कॉलेज, धुले

[2]सहयोगी प्राध्यापक तथा शोध निदेशक हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड, परभणी

जन्म : अहिल्यादेवी होलकर (1725–1795) एक महान शासक थी और मालवा प्रांत की महारानी । लोग उन्हे राजमाता अहिल्यादेवी होलकर नाम से भी जानते हैं और उनका जन्म महाराष्ट्र के चोंडी गाँव में 1725 में हुआ था। उनके पिता मानकोजी शिंदे खुद धनगर समाज से थे, जो गाँव के पाटिल की भूमिका निभाते थे।

उनके पिता ने अहिल्याबाई को पढाया–लिखाया। अहिल्याबाई का जीवन भी बहुत साधारण तरीके से गुजर रहा था। लेकिन एकाएक भाग्य ने पलटी खाई और वह 18 वी सदीमें मालवा प्रांत की रानी बन गई।

युवा अहिल्यादेवी का चरित्र और सरलता ने मल्हारराव होलकर को प्रभावित किया। वे पेशवा बाजीराव की सेना में एक कमांडर के तौर पर काम करते थे। उन्हे अहिल्या इतनी अच्छी लगी कि उन्होने उनकी शादी अपने बेटे खंडेराव से करवा दी। इस तरह अहिल्यादेवी एक दुल्हन के तौर पर मराठा समुदाय के होलकर राजघराने में पहूँची। उनके पति की मौत 1754 में कुंभेर की लढाई में हो गई थी। ऐसे में अहिल्यादेवी पर जिम्मेदारी आ गई। उन्होंने अपने ससुर के कहने पर न केवल सैन्य मामलों में बल्कि प्रशासनिक मामलों में रुचि दिखाई और प्रभावी तरीके से उन्हे अंजाम दिया।

मल्हारराव के निधन के बाद उन्होंने पेशवाओं की गद्दी से आग्रह किया कि उन्हे क्षेत्र की प्रशासनिक बागडोर सौंपी जाए। मंजुरी मिलने के बाद 1766 में रानी अहिल्यादेवी मालवा की शासक बन गई। उन्होंने तुकोजी होल्कर को सैन्य कमांडर बनाया। उन्हे उनकी राजसी सेना का पूरा सहयोग मिला। अहिल्याबाई ने कई युध्द का नेतृत्व किया। वे एक साहसी योध्दा थी और बेहतरीन तीरंदाज। हाथी की पीठ पर चढकर लडती थी। हमेशा आक्रमण करने को तत्पर भील और गोंडस से उन्होंने कई बरसों तक अपने राज्य को सुरक्षित रखा।

रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वकर ले गई। वहाँ उन्होंने 18 वी सदी का बेहतरीन और आलीशान अहिल्या महल बनवाया। पवित्र नर्मदा नदी के किनारे बनाए गए इस महल के इर्द–गिर्द बनी राजधानी की पहचान बनी। टेक्सटाईल इंडस्ट्री । उस दौरान महेश्विर साहित्य, मूर्तिकला, संगीत और कला के क्षेत्र में एक गढ बन चुका था। मराठी कवि मोरोपंत शाहिर अनंत फंदी और संस्कृत विद्वान खुलासी राम उनके कालखंड के महान व्यक्तित्व थे।

एक बुध्दीमान, तीक्ष्ण सोच और स्वयंस्फूर्त शासक के तौर पर अहिल्याबाई को याद किया जाता है। हर दीन वह अपनी प्रजा से

बात करती थी। उनकी समस्याएँ सुनती थी। उनके कालखंड (1767–1795) में रानी अहिल्याबाई ने ऐसे कई काम किए कि लोग आज भी उनका नाम लेते है। अपने साम्राज्य को उन्होंने समृध्द बनाया। उन्होंने सरकारी पैसा बेहद बुध्दीमानी से कई किले, विश्रामगृह, कुएँ और सडके बनवाने पर खर्च किया। वह लोगों के साथ त्योहार मनाती और हिंदू–मंदिरों को दान देती।

एक महिला होने के नाते उन्होंने विधवा महिलाओं को अपने पति की संपत्ति को हासिल करने और बेटे को गोद लेनें मे मदद की। इंदौर को एक छोटेसे गाँव से समृदध हौर सजीव शहर बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कई मंदिरों का जीर्णोध्दार किया। उनका सबसे यादगार काम रहा, तकरीबन सभी बडे मंदिरों और तीर्थस्थलों पर निर्माण। हिमालय से लेकर दक्षिण भारत के कोन कोने तक उन्होंने इस पर खूब पैसा खर्च किया। काश, गया, सोमनाथ, आयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, द्वारका, बद्रीनारायण, रामेश्व्र और जगन्नाथपुरी के ख्यात मंदिरो में उन्होंने खुब काम करवाएँ।

अहिल्याबाई होल्कर का चमत्कृत कर देने वाले और अलंकृत शासन 1795 में खत्म हुआ, जब उनका, निधन हुआ। उनकी महानता और सम्मान में भारत सरकारने 25 अगस्त 1996 को उनकी याद में एक डाक टिकट जारी किया। इंदौर के नागरिकों ने 1996 में उनके नाम से एक पुरस्कार स्थापित किया। असाधारण कृतित्व के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है। इसके पहले सम्मानित शख्सियत नानाजी देशमुख थे।

उपलब्धियॉ :– अहिल्याबाई ने इंदौर को एक छोटे– से गाँव से खूबसूरत शहर बनाया। मालवा में कई किले और सडके बनवाई। उन्होंने कई घाट मंदिर, तालाब, कुएँ और विश्रामगृह बनवाएँ। न केवल दक्षिण भारत में बल्किहिमालय पर भी सोमनाथ, काशी, गया, अयोध्या, द्वारका, हरिद्वार, कांची, अवंती, बद्रीनारायण रामेश्वकर,

मथुरा और जगन्नाथपुरी आदि। अहिल्याबाई ने अपने राज्य कीं सीमाओंके बाहर भारत–भर के प्रसिध्द तीर्थो और स्थानों में मंदिर बनवाएँ, घाट बँधवाएँ, कुओं और बावडियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए, सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाई, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन–चिंतन और प्रवचन हेतु की। और आत्म–प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं मरते दम तक। ये उसी परंपरा में थी। जिसमें उनके समकालीन पूना के न्यायाधीश रामशास्त्री थे और उनके पीछे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई। अपने जीवनकाल में ही इन्हे जनता देवी समझने और कहने लगी थी। इतना बडा व्यक्तित्व जनता ने अपनी आँखों देखा ही कहाँ था। जब चारों ओर गडबड मची हुई थी। शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहे थे।

प्रजाजन–साधारण गृहस्थ, किसान, मजदूर, अत्यंत हीन अवस्था में सिसक रहे थे। उनका एक मात्र सहारा धर्म, अंधविश्वीसों, भय त्रासों और रुढियों की जकड में कसा जा रहा था। न्याय में न शक्ति रही थी, न विश्वाँस। ऐसे काल की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई ने जो कुछ किया और बहुत किया ,वह चिरस्मरणीय है।

इंदौर में प्रति वर्ष भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव होता चला आता है। अहिल्याबाई जब 6 महिने के लिये पूरे भारत की यात्रा पर गई तो ग्राम उबदी के पास स्थित कस्बे अकावल्या के पाटीदार को राजकाज सौंप गई, जो हमेशा वहाँ जाया करते थे। उनके राज्य संचालन से प्रसन्न होकर अहिल्याबाई ने आधा राज्य देने को कहा परंन्तु उन्होंने सिर्फ यह मांगा कि महेश्वार ये मेरे समाज लोग यदि मुर्दो के जलाने आये तो कपडों समेत जलाये।

मतभेद :– उनके मंदिर निर्माण और अन्य धर्म–कार्यों के महत्व के विषय में मतभेद है। इन कार्यो में अहिल्याबाई ने अंधाधूंध खर्च किया

और सेना नए ढंग पर संगठित नही की। तुकोजी होलकर की सेना को उत्तरी अभियानों में अर्थ संकट सहना पडा. कही–कही यह आरोप भी है. इन मंदिरों को हिंदु धर्म की बाहरी चौकिंया बतलाया है। तुकोजीराव होलकर के पास बारह लाख रुपये थे। जब वह अहिल्याबाई से रुपये की माँग पर माँग कर रहा था। और संसार को दिखलाता था कि रुपए पैसे से तंग हूँ। फिर इसमें अहिल्याबाई का दोष क्या था? हिंदुओं के लिए धर्म की भावना सबसे बडी प्रेरक शक्ति रही है।. अहिल्याबाई ने उसी का उपयोग किया। तत्कालिन अंधविश्वाईसों और रुढियों का वर्णन उपन्यास में आया है। इन में से एक विश्वोस था मांधता क निकट नर्मदातीर स्थित खडी पहाडी से कुदकर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्राणत्याग, आत्महत्या कर डालना।

विचारधाराएँ :– अहिल्याबाई के संबंध में दो प्रकार की, विचार धाराएँ रही है। एक में उनको देवी के अवतार की पदवी दी गई है, दूसरी में उनके अतिउत्कृष्ठ गुणों के साथ अंधविश्वासों और रुढियों के प्रति श्रध्दा को भी प्रकट किया है।. वह अंधेरे में प्रकाश–किरण के समान थी, जिसे अँधेरा बार–बार ग्रसने की चेष्टा करता रहा। अपने उत्कृष्ठ विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज मे उन्हे देवी का दर्जा मिला।

देश में स्थान :– स्वतंत्र भारत में अहिल्याबाई होलकर का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। इनके बारे में अलग–अलग राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में अध्याय मौजूद है। चुँकि अहिल्याबाई होलकर को एक ऐसी महारानी के रुप में जाना जाता है, जिन्होनें भारत के अलग–अलग राज्यों मे मानवता की भलाई के लिए अनेक कार्य किये थे। इसलिये भारत सरकार तथा विभिन्न राज्यों की सरकारों ने उनकी प्रतिमायें बनवायी है और उनके नाम से कई कल्याणकारी योजनाओं भी चलाई जा रही है।

ऐसी ही एक योजना उत्तराखंड सरकार की ओर से भी चलाई जा रही है। जो अहिल्याबाई होलकर को पूर्ण सम्मान देती है। इस योजना का नाम अहिल्याबाई होलकर भेड बकरी विकास योजना है। अहिल्याबाई होलकर भेड–बकरी पालन योजना के तहत उत्तराखंड के बेरोजगार बीपीएल, राशनकार्ड धारकों, महिलाओं व आर्थिक के रुप से कमजोर लोगों कों बकरी पालन युनिट के निर्माण के लिए भारी अनुदान राशिप्रदान की जाती है। लगभग 1,00,000/- की इस युनिट के निर्माण के लिए सरकार की ओर से रु. 91770/- रुपये सरकारी सहायत्ता रुप में अहिल्याबाई होलकर के लाभार्थी को प्राप्त होते है।

सेनापति के रुप में :– मल्हारराव के भाई बंदो में तुकोजीराव होलकर एक विश्वारसपात्र युवक थे। मल्हारराव ने उन्हे भी सदा अपने साथ में रखा था और राजकाज के लिए तेयार कर लिया था। अहिल्याबाई ने इन्हे अपना सेनापति बनाया और चौथ वसूल करने का काम उन्हे सौंप दिया। वैसे तो उम्र में तुकाजीराव होलकर अहिल्याबाई से बडे थे, परंतु तुकोजी उन्हे अपनी माता के समान ही मानते थे और राज्य का काम पुरी लगन और सच्चाई के साथ करते थे। अहिल्याबाई का उन पर इतना प्रेम और विश्वाथस था कि वह भी उन्हे पुत्र जैसा मानती थी। राज्य के कागजों में जहॉ कही उनका उल्लेख आता है वहाँ तथा मुहरों में भी खंडोजी सुत तुकोजी होलकर इस प्रकार कहा गया है।

मृत्यु :– राज्य की चिंता का भार और उस पर प्राणों से भी प्यारे लोगों का वियोग। इस सारे शोक भार को अहिल्याबाईं का शरीर अधिक नही संभाल सका। और 13 अगस्त सन 1795 को उनकी जीवन–लीला समाप्त हो गई। अहिल्याबाई के निधन के बाद महाराज तुकोजीराव ने राज्य की शासन व्यवस्था को सँभाला।

20

अहिल्याबाई होलकर का सामाजिक योगदान

प्रा. सौ. रश्मी रमेश देसाई
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय
खारेपाटण, रा. राजापूर, जि. रत्नागिरी

प्रास्ताविक :–

अहिल्याबाई होलकर माणकोजी शिन्दे की लाडली कन्या थी। उनका जन्म 31 मई 1725 में हुआ था। वह इतिहास प्रसिध्द सुभेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव की पत्नी थी। अहिल्याबाई मालवा साम्राज्य की राणी थी। उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत था । उनका विवाह दस दूबारह वर्ष की आयु में हुआ था । उनतीस वर्ष की अवस्था में वह विधवा हो गयी। पती का स्वभाव चंचल और उग्र था। वह सब उन्होने सह लिया। फिर जब बयालीस तैंतालीस वर्ष की थी पुत्र मालेराव का देहांत हो गया। जब अहिल्याबाई कि आयु बासट वर्ष के लगभग थी, दैहित्रनथू चल बसा। चार वर्ष पिछे दामाद यशवंतराव फणसे न रहा और उनको पुत्री मुक्ताबाई सती हो गई। दूर के संबंधी तुकोजीराव के पुत्र मल्हारराव पर उनका प्रेम था। वह